Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 8, August - 2025

DOIs:10.2018/SS/202508012 --:-- Research Paper / Article / Review

किशोरो में अपराध को बढ़ावा देने में पारिवारिक वातावरण की भूमिका

प्रदीप कुमार
शोधार्थी,
मनोविज्ञान विभाग,
जे एस हिन्दू (पी जी) कॉलेज, अमरोहा
Email – pkambedkar8882@gmail.com

डॉ सचिन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग,
जे एस हिन्दू (पी जी) कॉलेज, अमरोहा
Email – spvishvkarma1@gmail.com

सार: आज के समय में अपराध प्रवृति एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या बनी हुई है ।जो समाज को अंदर ही अंदर खोखला कर रही है। प्रस्तुत अध्ययन का यह उद्देश्य है कि किशोरों में अपराध को बढ़ावा देने में परिवार क्या भूमिका निभाता है। शोध में रामपुर व मुरादाबाद जिले के कक्षा- 11-12 के 100 किशोरों को स्तरीकृत याद्दच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया, जिनकी आयु 13 से 19 वर्ष थी। प्रस्तुत शोध को करने के लिए गृह पर्यावरण इन्वेंटरी (के० एस० मिश्रा, 2023) तथा अपराध प्रवृति स्केल (रीता चोपड़ा और एस० कौर 2013) को उपयोग में लाया गया। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए पियर्सन सहसंबंध गुणांक विधि(Product Moment) तथा टी परीक्षण की गणना की गई। इस अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि किशोरों में अपराध को बढ़ावा देने में पारिवारिक वातावरण और अपराध प्रवृति में सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया। (r=0.177,p=0.0776) परीक्षण द्वारा यह अंतर सांख्यिकी रूप से सार्थक पाया गया (t=1.0075,p=0.3162 तथा t=0.7431,p=0.4592) निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि किशोरों में अपराध को बढ़ावा देने में पारिवारिक वातावरण की सार्थक भूमिका नहीं होती है। इस प्रकार सामाजिक विकास, राष्ट्र निर्माण तथा आधुनिक युवा को अपराध जैसी कुरीतियों से बचाने के लिए शिक्षा एवं जागरूकता आवश्यक है।

मुख्य शब्द: किशोर, अपराध प्रवृति, पारिवारिक वातावरण।

1. प्रस्तावना

वर्तमान युग में जहाँ विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण के प्रभाव से समाज तीव्र गति से प्रगति कर रहा है, वहीं दूसरी ओर मानवीय जीवन की जटिलताएँ भी निरंतर बढ़ रही हैं। मनुष्य अनेक भौतिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं से घिरा हुआ है, जिनकी पूर्ति हेतु वह दिन-प्रतिदिन विविध क्रियाएँ करता है। इन क्रियाओं के परिणामस्वरूप उसमें नई इच्छाएँ जन्म लेती हैं, और जब यह इच्छाएँ उचित मार्गदर्शन और नैतिक मूल्यों के बिना विकसित होती हैं, तो असंतुलन, कुंठा और अपराध की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। किशोरावस्था जीवन का वह संवेदनशील चरण है जहाँ व्यक्ति न तो पूर्णतः बालक होता है और न ही वयस्क। यह अवस्था जैविक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तन की होती है, जिसमें आत्म-स्वीकृति, पहचान और आत्म-निर्माण की प्रक्रिया चलती है। किशोर समाज में रहकर विभिन्न व्यवहारों को सीखता है, उसका व्यक्तित्व पारिवारिक वातावरण, सामाजिक स्थिति, आर्थिक दशा तथा उसके आसपास की घटनाओं से गहरे रूप में प्रभावित होता है। आज के समाज में किशोरों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है — जैसे पारिवारिक कलह, माता-पिता का असंतुलित व्यवहार, अभिभावकों द्वारा अनदेखी, आर्थिक तंगी, सामाजिक असमानता, और भावनात्मक अस्थिरता। ये सभी परिस्थितियाँ मिलकर किशोरों में असंतोष, विद्रोह, और अपराध की प्रवृत्ति को जन्म देती हैं। विडंबना यह है कि किशोरों की ये समस्याएँ केवल भारत तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर गहराती हुई चिंता का विषय बन चुकी हैं। अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि किशोरों में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्तियाँ समाज की सुरक्षा, नैतिकता और संरचना के लिए चुनौती बनती जा रही हैं। परिवार, जो कि किशोर के व्यक्तित्व निर्माण का पहला और सबसे महत्वपूर्ण संस्थान होता है। यदि वहाँ संवादहीनता, उपेक्षा, दंडात्मक व्यवहार या आपराधिक वातावरण हो, तो यह किशोर के मन-मस्तिष्क को दूषित कर सकता है। पारिवारिक प्रेम, सहयोग, समझदारी और सकारात्मक अनुशासन का अभाव किशोरों को समाजविरोधी गतिविधियों की ओर प्रेरित कर सकता है। आपराधिक प्रवृत्ति एक सामाजिक विकृति है, जो समाज की मूल्यपरक संरचना से टकराती है। क्रॉस एवं जोन्स के अनुसार, "अपराध वह विधिक अपकार है, जिसके लिए राज्य द्वारा दंड का प्रावधान किया

गया है।" किशोरों में अपराध जैसे – चोरी, हिंसा, यौन अपराध, नशा, झूठ बोलना, विद्यालय से भागना, शरारतें आदि – केवल विधिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी चिंताजनक हैं। भारतीय दंड संहिता (1860), किशोर न्याय अधिनियम (1986, 2000, 2015) जैसे कई विधानों के बावजूद किशोर अपराधों में वृद्धि यह संकेत देती है कि केवल कानून पर्याप्त नहीं हैं — जब तक कि पारिवारिक वातावरण को स्वस्थ, संरचनात्मक और उत्तरदायी न बनाया जाए।
इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में अपराध के विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका की पहचान करना है। यह अध्ययन इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि कैसे पारिवारिक अस्थिरता, आर्थिक तनाव, संवादहीनता और अभिभावकों की उदासीनता किशोरों को गलत राह पर ले जाती है। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि क्या एक सशक्त, सहानुभूतिपूर्ण और सकारात्मक पारिवारिक परिवेश किशोर अपराध को रोक सकता है। अतः यह शोध समाज, परिवार और नीति निर्माताओं को इस दिशा में एक ठोस अंतर्दृष्टि प्रदान करने का प्रयास है, ताकि किशोरों की ऊर्जा को अपराध के स्थान पर रचनात्मक कार्यों में प्रवाहित किया जा सके।

पारिवारिक वातावरण

परिवार को बालक के सामाजिक और नैतिक विकास की प्रथम इकाई माना गया है। यही वह स्थान है जहाँ बालक सबसे पहले व्यवहार, अनुशासन और मूल्यों को सीखता है। एक सकारात्मक, समन्वित और सुसंस्कृत पारिवारिक वातावरण न केवल बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है, बल्कि उसे जीवन की विभिन्न चुनौतियों से निपटने में भी सक्षम बनाता है। माता-पिता बच्चों से यह अपेक्षा रखते हैं कि वे अच्छे नागरिक बनें, जिससे परिवार का समाज में सम्मान बना रहे। अतः अभिभावकों का व्यवहार और उनके द्वारा निर्मित पारिवारिक छवि बालक के सम्पूर्ण जीवन को दिशा देने वाली बन जाती है। डी. एन. मजूमदार के अनुसार, परिवार एक ऐसा सामाजिक समूह है जो सामान्यतः एक छत के नीचे रहता है, जैविक संबंधों से जुड़ा होता है और पारस्परिक संबंधों के आधार पर एकता का अनुभव करता है। यदि यह इकाई अस्थिर, संघर्षपूर्ण या अनुशासनहीन हो, तो उसका सीधा प्रभाव बच्चों के व्यवहार पर पड़ता है। घर में आए दिन होने वाली मारपीट, गाली-गलौच और कलह बच्चों को भी वही व्यवहार अपनाने की ओर प्रेरित करती हैं। इसीलिए यह आवश्यक है कि परिवार एक सुरक्षित, सहयोगपूर्ण और संवादमूलक वातावरण प्रदान करे, जिससे आने वाली पीढ़ी मानसिक रूप से स्वस्थ और नैतिक रूप से सुदृढ़ बन सके। डॉ. प्रसाद वेणी के अनुसार, परिवार व्यक्ति से भी पुरातन संस्था है। यही वह इकाई है जहाँ बालक का जन्म, पालन-पोषण और सामाजीकरण होता है। परिवार से ही वह जीवन के प्राथमिक पाठ — जैसे संयम, सहिष्णुता, कर्तव्य और नैतिकता — सीखता है। परिवार की भूमिका केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बालक को जीवन जीने की दिशा भी देता है। जब अभिभावक अपनी जिम्मेदारियों से विमुख होकर केवल अपने स्वार्थ की धारा में बहते रहते हैं, तब बच्चों की जीवन दिशा भी अनियंत्रित हो जाती है। यह लापरवाही बाद में उनके व्यक्तित्व और व्यवहार पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। कुछ अभिभावक 'हम क्यों चिंता करें' जैसे भाव से बच्चों को पूर्ण स्वतंत्रता दे देते हैं। इस तरह की सोच से बच्चे अनियंत्रित हो जाते हैं और जब वे किसी गंभीर समस्या या आपराधिक प्रवृत्ति में फँसते हैं, तब अभिभावकों की पूर्व की उदासीनता उन्हें आत्मग्लानि में धकेल देती है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि घर का वातावरण ऐसा हो जो बच्चों के लिए एक जीवन-शिक्षा के रूप में कार्य करे। जिस प्रकार प्रारंभ में सीखी गई वर्णमाला जीवन भर साथ रहती है, उसी प्रकार प्रारंभिक पारिवारिक संस्कार भी जीवन भर साथ रहते हैं — चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक। पारिवारिक वातावरण किशोरों के व्यवहार को निम्नलिखित तरीकों से प्रभावित करता है:

1. जिन किशोरों को माता-पिता का अत्यधिक स्नेह मिलता है, वे या तो अपराध से दूर रहते हैं या अत्यधिक भावनात्मक होकर विपरीत दिशा में भी जा सकते हैं।
2. अनुशासनहीन स्वतंत्रता से किशोरों में आपराधिक प्रवृत्ति के बीज पनप सकते हैं।
3. अत्यधिक अपेक्षाएं और उनके अनुरूप सफलता न मिल पाने पर किशोर अपराध की ओर मुड़ सकते हैं।
4. परिवार में लगातार कलह और अस्थिरता किशोरों में आक्रोश और विद्रोह को जन्म देती है।
5. अत्यधिक प्रतिबंध और नियंत्रण किशोरों में विद्रोही व्यवहार और आपराधिक झुकाव उत्पन्न कर सकते हैं।
6. एक सहयोगी और खुला पारिवारिक वातावरण किशोरों को भावनात्मक रूप से सुरक्षित रखता है और वे छोटी-छोटी बातों को साझा कर पाते हैं, जिससे उनमें मानसिक तनाव नहीं पनपता।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि किशोरों की आपराधिक प्रवृत्तियों के विकास में पारिवारिक वातावरण की निर्णायक भूमिका होती है। अतः अपराध की रोकथाम हेतु परिवार को एक जागरूक, संवादशील और सहायक इकाई के रूप में कार्य करना चाहिए।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

कोक और उजुन, 2023 ने स्वभाव संबंधी सचेतनता , भावनाओं के बारे में विश्वास, सवेंगात्मक विनियमन और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के बीच सम्बंध की जांच एक मॉडल परीक्षण अध्ययन में 18 से 29 वर्ष के 608 युवाओं को शामिल किया और स्केल के रूप में दिमागीपन स्केल संशोधित (सी0ए0एम0एस-आर) लघु रूप (सी0ई0आर0 क्यू- एस0एफ0) अवसाद, चिन्ता , तनाव स्केल-21 (डी0ए0एस0एस0-21) और मानसिक स्वास्थ्य स्केल सातत्य स्केल (एम0एच0सी0- एस0एफ0) का उपयोग किया और पाया कि

संवेगात्मक के बारे में विश्वास , स्वभाव संबधी मानसिकता और अनुकूली /दुरअनुकूली संवेगात्मक विनियमन रणनीतियों में सवेंगात्मक विकारो के लक्ष्यों और कल्याण के बीच संबंधो में मध्यस्था करते हैं।

तानिया (2022) ने मनोविकृति विज्ञान के लक्षण, वर्णन, विकास और उपचार में संवेगात्मक विनियमन की भूमिका से सम्बन्धित कार्य किया अनुसंधान की एक अलग पंक्ति में संवेगात्मक विनियमन के लिए प्रभावी ट्रांस डायग्नोस्टिक हस्तक्षेप विकसित किये लेकिन क्या यह हस्तक्षेप पहले से मौजूद उपचारों की तुलना में बेहतर परिणाम देते हैं यह एक खुला प्रश्न बना हुआ है। बुनियादी नैदानिक और हस्तक्षेप अनुंसधान को जोड़ने से संवेगात्मक विनियमन में क्या गलत हो सकता है इसकी समझ बढ़ने और अधिक प्रभावी हस्तक्षेपों के विकास में सहायता मिलने की संभावना है।

पैली ब्लेयर, हेजल औरना, स्तासिया (2022) ने पारिवारिक स्तर की घटना के रूप मे संवेगात्मक विनियमन और सहनियमन की संकल्पना से सम्बन्धित अध्ययन किया और देखा कि किसी के संवेगात्मक अनुभवों को प्रभावी ढंग से नकारात्मक करने की क्षमता सकारात्मक और नकारात्मक दोनो स्वस्थ विकास के लिए एक महत्वपूर्ण बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में अच्छी तरह स्थापित है इसके अलावा इस बात के पर्याप्त सबूत है कि सहायक रिश्ते इस क्षेत्र में बच्चों के विकास को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम हो सकते हैं।

सिल्वर्स (2022) ने किशोरावस्था संवेगात्मक विनियमन विकास के लिए महत्वपूर्ण अवधि के रूप में अध्ययन किया और देखा कि किशोरावस्था संवेगात्मक विनियमन के विकास के लिए एक गतिशील अवधि है किशोरावस्था संवेगात्मक विनियमन के व्यवहारिक और न्यूरो बायोलॉजिकल सूचकांक कैसे सामान्य रूप से विकसित होते है को देखा गया।

डुओना और सेठ (2022) ने बचपन की प्रतिकूलता और मनो विकृति के बीच मध्यस्था के रूप में संवेगात्मक विनियमन एक मेटा विश्लेषण से सम्बन्धित अध्ययन किया जिसमें उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर वर्तमान मेटा विश्लेषण बचपन की प्रतिकूलता और मनो विकृति के बीच सम्बंध में संवेगात्मक विनियमन की यंत्रवत भागीदारी की जांच करने के लिए निर्धारित किया गया तीन Database named as A Lab of Web of Science में व्यवस्थित खोजो ने 215 योग्य, अध्ययनों की पहचान की मेटा विश्लेषणात्मक संरचनात्मक समीकरण मॉडलिग का उपयोग करते हुए परिणामों से पता चला कि परिवर्तित संवेगात्मक विनियमन बचपन की प्रतिकूलता एक सुसंगत मार्ग है और मनोविकृति के जोखिम में योगदान देता है।

वाडली ,सारा तथा वैली (2022) ने युवा लोगों द्वारा संवेगात्मक विनियमन के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग पर वैश्विक महामारी का प्रभाव पर अध्ययन किया जिसमें दो तंरग अनुदैर्घ्य सर्वेक्षण आयोजित किया जिसमें कोविड- 19 महामारी से पहले और उसके दौरान 154 विश्वविद्यालयों के छात्रों से डाटा एकत्रित किया गया। महामारी के दौरान प्रतिभागियों को संवेगात्मक संगठन के साथ-साथ आवाजाही और सामाजिक सम्पर्क पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ा इससे परिणाम यह हुआ कि प्रतिभागियों की संवेगात्मक विनियमन रणनीतियां बदल गई और महामारी के दौरान अधिक सजातीय हो गये। जबकि ऑफ लाईन रणनीतिया कम उपलब्ध थी तो प्रतिभागियों ने डिजीटल उपकरणों का सहारा लिया जबकि वह संवेगात्मक रूप से अपने उपकरणों पर अधिक निर्भर हो गये।

लोढ़ा, श्रुति बेंकटेश, कुमार, और अविनास, सूसा (2018) ने आपराधिक व्यवहार में महिला अपराधियों को प्रोत्साहन एक भारतीय परिपेक्ष्य से सम्बन्धित अध्ययन किया। संख्यिकीय आंकडे हाल के अतीत और वर्तमान समय पर महिला आपराधिक द्वारा किए जा रहें विभिन्न प्रकार के आपराधिक व्यवहार के सम्बंध में महिलाओ के बीच आपराधिक व्यवहार में बढते रूझान को दर्शाते हैं आपराधिक कृत्यो के पीछे की प्रेरणा, इसमे Neurobiological sub-states और अपराध के लिए जिम्मेदार स्वभाव संबंधी लक्षणों के आधार पर पुरूष और महिला आपराधिक व्यवहार के बीच विसंगति मौजूद है। महिलाओं के बीच अपराध कम करने के लिए एक व्यापक और पुर्नवास मॉडल की आवश्यकता है।

जीबोल्ड स्कोपेल तथा जायर, जीस (2022) ने आपराधिक सजा के लिए बचपन के व्यक्तिगत और पारिवारिक परिवर्तनीय जोखिम कारकः ब्राजील से 7 साल का समूह अध्ययन। इस अध्ययन मे नमूने में बचपन (5-14 वर्ष , संख्या - 2511) में मूल्यांकन किए गए परिवर्तनीय व्यक्तिगत और पारिवारिक जोखिमों और 7 साल के अनुवर्ती (13-21 वर्ष संख्या- 1905)ा पर आपराधिक सजा के बीच सम्बंध स्थापित किया है और पाया कि बच्चों को गरीबी के सम्पर्क में आने से रोकने के बाद की आपराधिक सजाओं में लगभग एक चौथाई की कमी आयेगी। निष्कर्ष ये यह पता चला कि आपराधिक सजा में गरीबी के महत्व को उजागर करते हैं क्योंकि इसमे कई अभाव शामिल है ओर सुझाव देते है कि बचपन के दौरान गरीबी उन्मूलन हस्तक्षेप (ब्राजील) के युवाओं के बीच अपराध को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

शोध के उददेश्य

1. किशोरों में आपराधिक प्रवृत्ति और पारिवारिक परिवेश का वितरण ज्ञात करना।
2. पारिवारिक परिवेश व आपराधिक प्रवृत्ति के बीच सम्बंध की सार्थकता का अध्ययन करना।
3. किशोरों की आपराधिक प्रवृत्ति एवं पारिवारिक परिवेश में यौन भिन्नता की सार्थकता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

1. पारिवारिक परिवेश व आपराधिक प्रवृत्ति के बीच कोई सार्थक सम्बंध नही होगा।

2. किशोरों की आपराधिक प्रवृत्ति में कोई सार्थक यौन भिन्नता नही होगी।

3. शोध प्रविधि

शोध अभिकल्प

किशोरों में आपराधिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में पारिवारिक वातावरण की भूमिका का अध्ययन करने के लिए वर्तमान शोध हेतु सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन विधि

प्रतिदर्श के रूप में कुल 100 किशोर (50-पुरूष, 50-महिला) रामपुर और मुरादाबाद जिले से लिए जायेंगें। प्रतिदर्श चयन के लिए उददेश्य पूर्ण विधि का प्रयोग प्रतिचयन के रूप में किया जायेगा। उन किशोरो को शामिल नही किया जायेगा जो अनाथ या ऐसे बच्वें हैं जिनके माता-पिता में सम्बन्ध विच्छेद हो चुका है।

चर

स्वतन्त्र चर- पारिवारिक वातावरण, यौन (पुरूष,महिला)
आश्रित चर- किशोरों में आपराधिक प्रवृत्ति

आँकडों के संग्रहण हेतू उपकरण

1. गृह पर्यावरण इन्वेन्टरी- के0 एस0 मिश्रा (2023) द्वारा निर्मित गृह पर्यावरण इन्वेन्टरी स्केल का प्रयोग किया गया। यह एक 100 पद की प्रश्नावली है जो कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों के लिए हैं। तथा उसमे 10 चरों यानि (नियन्त्रण, सुरक्षा, दण्ड, अनूरूपता, सामाजिक अलगाव, इनाम, विशेषाधिकारों सें वंचित, पोषण, अस्वीकृति, अनुमति,) ।
2. अपराध प्रवृत्ति स्केल - रीता चौपड़ा और एस0 कौर (2013) द्वारा निर्मित अपराध प्रवृत्ति स्केल का प्रयोग किया गया। जिसमें कुल 60 पद हैं। यह 14 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए है। इस परीक्षण - पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता .48 है और अर्ध विच्छेद विश्वसनीयता .54 है।

प्रक्रिया

सर्वप्रथम चयनित प्रतिभागियों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया गया और उन्हें शोध के उद्देश्य और प्रक्रिया के बारे में समझाया गया प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए उनकी सहमति प्राप्त की गई तथा ऐसे प्रतिभागियों को शामिल नहीं किया गया जो शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं थे इसके बाद उन्हें एक आरामदायक वातावरण और उचित प्रकाश की व्यवस्था की गई तथा परीक्षण से संबंधित सभी निर्देशों को स्पष्ट रूप से समझाया गया और उन्हें परीक्षण से संबंधित आवश्यक सामग्री प्रदान की गई प्रतिभागियों को प्रशिक्षण पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया जिससे कि वे बिना किसी दबाव के अपने उत्तर दे सकें प्रशिक्षण पूरा करने के बाद समस्त मापनी पुस्तिका की जांच की गई ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके की सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। अंत में प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद सभी प्रशिक्षण सामग्री वापस ले ली गई। अंत में सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया

4. परिणाम (Results):

तालिका 1: पारिवारिक वातावरण और आपराधिक प्रवृत्ति के बीच सहसंबंध

चर		N	r मान	p मान	निष्कर्ष
आपराधिक प्रवृत्ति	पारिवारिक वातावरण	100	0.177	0.0776	असार्थक सकारात्मक सहसंबंध

प्रस्तुत शोध में पारिवारिक वातावरण और किशोरों की आपराधिक प्रवृत्ति के बीच संबंध को जांचने हेतु पीयर्सन सहसंबंध और टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि पारिवारिक वातावरण और आपराधिक प्रवृत्ति के बीच r=0.177 का असार्थक सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, जोकि .05 के स्तर पर सार्थक नही है। अतः यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण और किशोरों की आपराधिक प्रवृत्ति के मध्य कोई *सार्थक संबंध नहीं* है। इस आधार पर शोध की पहली परिकल्पना — *"पारिवारिक परिवेश व आपराधिक प्रवृत्ति के बीच कोई सार्थक सम्बंध नहीं होगा"* — को **स्वीकार** किया गया।

तालिका 2: लिंग के आधार पर आपराधिक प्रवृत्ति और पारिवारिक वातावरण में अंतर का तुलनात्मक विश्लेषण

चर	समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	P मान
आपराधिक प्रवृत्ति	पुरुष	50	74.74	5.37	1.0075	0.3162
	महिला	50	75.86	5.74		
पारिवारिक वातावरण	पुरुष	50	239.64	27.11	0.7431	0.4592
	महिला	50	243.22	20.62		

दूसरे स्तर पर, पुरुष और महिला किशोरों की आपराधिक प्रवृत्तियों में अंतर की जांच के लिए टी-परीक्षण किया गया। पुरुषों का औसत स्कोर 74.74 और महिलाओं का औसत स्कोर 75.86 पाया गया, परंतु यह अंतर भी सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं था क्योंकि t-मूल्य 1.0075 और p-मूल्य 0.3162 पाया गया। इसी प्रकार, पारिवारिक वातावरण के स्कोर में भी पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई उल्लेखनीय सांख्यिकीय अंतर नहीं मिला ($t = 0.7431$, $p = 0.4592$)। अतः पुरुष और महिला किशोरों की आपराधिक प्रवृत्तियों तथा पारिवारिक वातावरण के अनुभवों में कोई विशेष यौन भिन्नता नहीं पाई गई। इस प्रकार, दूसरी परिकल्पना — *"किशोरों की आपराधिक प्रवृत्ति में कोई सार्थक यौन भिन्नता नहीं होगी"* — को भी **स्वीकार** किया गया। इन निष्कर्षों से यह संकेत मिलता है कि किशोरों में अपराध प्रवृत्ति को प्रभावित करने में पारिवारिक वातावरण की भूमिका सीमित है, तथा इसमें लिंग के आधार पर कोई विशेष भिन्नता परिलक्षित नहीं होती।

5. परिचर्चा

प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण और आपराधिक प्रवृत्ति के बीच सकारात्मक सहसंबंध नही पाया गया, यह सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन रहा। इसका तात्पर्य यह है कि पारिवारिक वातावरण किशोरों की आपराधिक प्रवृत्तियों को कुछ हद तक प्रभावित करता है, परंतु अन्य कारक जैसे सामाजिक परिवेश, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत अनुभव आदि भी इसमें बड़ी भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि महिलाओं में अपराध प्रवृत्ति का औसत पुरुषों की अपेक्षा थोड़ा अधिक था, जिससे यह संकेत मिलता है कि महिलाओं में भी सामाजिक-आर्थिक एवं पारिवारिक कारकों की प्रतिक्रिया स्वरूप आपराधिक प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं। हालाँकि यह अंतर भी सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं रहा। पारिवारिक वातावरण जैसे कि संवाद की कमी, उपेक्षा, दंडात्मक व्यवहार, तथा आर्थिक अस्थिरता किशोरों में असंतोष, विद्रोह, एवं अपराध की प्रवृत्तियों को जन्म दे सकते हैं। इसके विपरीत सहयोगात्मक, स्नेहपूर्ण एवं अनुशासित वातावरण किशोरों को आपराधिक प्रवृत्तियों से दूर रख सकता है। यह अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों जैसे लोढ़ा एवं अन्य (2018), डुओना और सेठ (2022) के निष्कर्षों के अनुरूप नही है, जिनमें पारिवारिक अस्थिरता, भावनात्मक उपेक्षा, एवं बचपन की प्रतिकूलता को आपराधिक प्रवृत्तियों का प्रमुख कारण माना गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि परिवार, किशोरावस्था में व्यक्तित्व के निर्माण एवं व्यवहार नियमन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और इसीलिए पारिवारिक सुधार, संवाद एवं जागरूकता अभियानों के माध्यम से किशोर अपराध को काफी हद तक रोका जा सकता है।

6. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि किशोरों में अपराध प्रवृति को बढ़ावा देने में पारिवारिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है। जिन प्रतिभागियों के परिवार का वातावरण कम शिक्षित और आर्थिक रूप से कमजोर था उनमें अपराध के प्रति सार्थक देखी गई । इसके विपरीत जिन परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत और शिक्षा उच्च थी उनमें यह प्रवृत्ति कम थी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पारिवारिक वातावरण, शिक्षा, आर्थिक स्थिति तथा जीवन शैली जैसे कारक व्यक्ति के व्यवहार और उसकी सोच को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि वर्तमान समय में पारिवारिक वातावरण किशोरों में अपराध प्रवृति को प्रभावित कर सकता है और समाज में सार्थक प्रभाव पड़ सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में सैंपल साइज कम होने तथा अध्ययन में प्रस्तुत उपकरण के कारण यह परिणाम प्राप्त हुए। जो इसके कारण हो सकते हैं।

7. परिसीमाएं

- प्रस्तुत अध्ययन केवल रामपुर और मुरादाबाद जिले से संबन्धित है।
- अध्ययन मे केवल 13 से 19 वर्ष के किशोरों के शामिल किया गया है।
- अध्ययन में न्यादर्श का आकार 100 रखा गया है।

8.सुझाव

- किशोरों को आधुनिक सोच वाले समुदायों में समानता , अधिकारों तथा महिला जागरूकता पर आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

- अपराध प्रवृति के विरुद्ध स्थानीय भाषा में जन जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएं ताकि किशोरों की सोच में परिवर्तन लाया जा सके।
- समाज के सभी समुदायों एवं नीति निर्माता को चाहिए कि वे ऐसी योजनाएं तैयार करें जिससे वर्तमान युवा को आधुनिक सोच प्रदान हो और रूढ़िवादिता की हिंसक सोच को चुनौती दी जा सके।
- समाज में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं और शिक्षकों को किशोरों से जोड़कर उनके मूल्यों पर आधारित संवाद, नुक्कड़- नाटक, आदि प्रक्रिया का आयोजन किया जाए।
- प्रत्येक परिवार में किशोरों से खुला संवाद, सम्मानजनक व्यवहार और समान अधिकार की शिक्षा दी जाए जिससे किशोरों में अपराध के प्रति मानसिकता प्रारंभ से ही समाप्त की जा सके।
- आगामी शोधों में बड़े न्यायदर्श पर विभिन्न स्थानीय समस्याएं, सामाजिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, सोशल मीडिया तथा शिक्षा के प्रभाव को भी शामिल किया जा सकता है जिससे इस विषय को और गहराई से समझा जा सकता है

संदर्भ :

1. Benjamin Tag, Niels van Berkel, Andrew W. Vargo, Zhanna Sarsenbayeva, Tyler Colasante, Greg Wadley, Sarah Webber, Wally Smith, Peter Koval, Tom Hollenstein, Jorge Goncalves, Vassilis Kostakos, Impact of the global pandemic upon young people's use of technology for emotion regulation, Computers in Human Behavior Reports, Volume 6,2022,100192,ISSN 2451-9588,
2. Billen, E., Garofalo, C., Schwabe, I., Jeandarme, I., & Bogaerts, S. (2023). Emotional, cognitive and behavioral self-regulation in forensic psychiatric patients: changes over time and associations with childhood trauma, identity and personality pathology. *Psychology, Crime & Law*, *29*(10), 1080–1106. https://doi.org/10.1080/1068316X.2022.2044813
3. Chattoraj, T., Srivastava, A. (2022). The role of mindfulness in cognitive emotion regulation and thought suppression. _*Indian Journal of Positive Psychology, 13*, 387 – 393. Available at: https://www.i-scholar.in/index.php/ijpp/article/view/218353. Date accessed: 27 May. 2024. doi:10.15614/ijpp/2022/v13i4/218353.
4. Current Opinion in Psychology, Volume 44,2022,Pages 258-263,ISSN 2352-250X,
5. De Clercq, D., Khan, M. A., & Haq, I. U. (2023). Perceived organizational politics and turnover intentions: critical roles of social adaptive behavior and emotional regulation skills. *Journal of Management & Organization*, *29*(2), 247–265. doi:10.1017/jmo.2021.26.
6. Docherty, M., Lieman, A., & Gordon, B. L. (2022). Improvement in Emotion Regulation While Detained Predicts Lower Juvenile Recidivism. *Youth Violence and Juvenile Justice, 20*(2), 164-183. https://doi.org/10.1177/15412040211053786
7. Gross, J. J. (2015). Emotion Regulation: Current Status and Future Prospects. https://doi.org/10.1080/1047840X.2014.940781
8. Jennifer A. Silvers, Adolescence as a pivotal period for emotion regulation development, KOÇ, M.S., UZUN, R.B. Investigating the Link Between Dispositional Mindfulness, Beliefs About Emotions, Emotion Regulation and Psychological Health: A Model Testing Study. J Rat-Emo Cognitive-Behaviour (2023).
9. Laird JJ, Klettke B, Mattingley S, Hallford DJ, Hall K. (2022). A Single-Case Series Trial of Emotion-Regulation and Relationship Safety Intervention for Youth Affected by Sexual Exploitation. *Psych*., *4*(3):475-493. https://doi.org/10.3390/psych4030037
10. Liu, F., Yu, T., Xu, Y. & Che, H. (2023). Psychological maltreatment and aggression in preadolescence: Roles of temperamental effortful control and maladaptive cognitive emotion regulation strategies. Child Abuse & Neglect*,* 135, 105996.
11. N Garnefski, V Kraaij, P Spinhoven, Negative life events, cognitive emotion regulation and emotional problems, Personality and Individual Differences, Volume 30, Issue 8, 2001, Pages 1311-1327, ISSN 0191-8869,
12. Psychological Inquiry, 26(1), 1–26.
13. Singh, P. (2023). Emotion regulation difficulties, perceived parenting and personality as predictors of health-risk behaviours among adolescents. *Curr Psychol 42*, 12896–12911. https://doi.org/10.1007/s12144-021-02536-3.
14. Singh, P., & Singh, A. (2023). Emotion Regulation Difficulties and Health-Risk Behaviours in Adolescents. *Behaviour Change*, *40*(2), 86–102. doi:10.1017/bec.2022.5
15. Zhou, X., Zhen, R. (2022). How do physical and emotional abuse affect depression and problematic behaviors in adolescents? The roles of emotional regulation and anger. Child Abuse & Neglect*,* 129, 105641. Doi: https://doi.org/10.1016/j.chiabu.2022.10 5641